हिन्दी साहित्य में 'आत्मकथा' लेखन की परम्परा और अनूप लाल मण्डल की आत्मकथा का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्व विद्यालय,

कामेश्वर नगर, दरभंगा

की

पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय – मानविकी

विषय – हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ. अर्चना कुमारी

सहायक प्राचार्य, हिंदी विभाग

राम निरीक्षण आत्मा राम महाविद्यालय, समस्तीपुर

शोध प्रज्ञा

बुलबुल कुमारी

पता – ग्राम + पोस्ट - हरपुर बोचहा

थाना -विद्यापति नगर

जिला -समस्तीपुर

पिनकोड-848503

पैट क्रमांक -22090106

प्रस्तावना

किसी भी रचनाकार की रचनाओं में हम उनके व्यक्तित्व का दिग्दर्शन तो करते हीं हैं, साथ ही रचनाकार की मूल प्रवृत्तियों से भी अवगत होते हैं। लेखक और पाठक के इस अंर्तसंबंध से हम कहीं न कहीं से प्रेरित भी होते हैं। हमारे महापुरूषों की जीवनियाँ जब हमारे सामने रखी जाती है तो हमारा अंतर्मन उसके कार्य–कलाप को स्वीकार भी करता है और कभी–कभी तो उन माहपुरूषों के विचारों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास भी करते हैं। यह आदर्श मानव की स्वाभाविक प्रक्रिया है।

यह कहा भी जाता है कि किसी व्यक्ति के बारे में जानना इतना आसान नहीं होता है। जिस प्रकार पानी में यदि बर्फ का एक टुकड़ा छोड़ा जाता है तब पानी में तैरती बर्फ के टुकड़े का तीन भाग पानी के अंदर हीं रहता है। यानी किसी भी मनुष्य को पूरी तरह से हम जान नहीं पाते हैं। लेकिन साहित्य की ऐसी हीं एक विधा है 'आत्मकथा' जिससे आत्मकथाकर के व्यक्तित्व से हम पूर्णतया परिचित हो सकते हैं। साहित्य में अन्यविधाओं से प्रेरणा नहीं ले पाते हैं जितना कि आत्मकथा लेखन से।

आत्मकथा में आत्मकथाकार अपने जीवन के उन मोतियों को चुनता है जिन्हें वह आत्मकथा रूपी माले में पिरोता है। इन मोतियों के चयन में एक श्रेष्ठ आत्मकथाकार केवल उन्हीं मोतियों को चुनता है जिससे न सिर्फ उसका जीवन प्रकाशित हुआ है अपितु साथ ही साथ समाज तथा साहित्य भी उससे प्रकाशित हो।

आत्मकथाकार एक मनुष्य ही हो सकता है और मनुष्य प्रकृततः एक सामाजिक प्राणी है। तो इस प्रकार अगर हम विचार करें तो पाएँगें कि मनुष्य चाहे या ना चाहे वह अपने जीवन को सामाजिक उत्तरदायित्व से नहीं बचा सकता। आत्मकथा के बारे में असंदिग्ध भाव से यह कह सकते हैं कि इस आत्मकथा से जितना स्वयं आत्मकथाकार के जीवन पर प्रकाश पड़ेगा उससे

कहीं अधिक प्रकाश सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों तथा धार्मिक रीतिरिवाजों पर पड़ेगा।

'अनूपलाल मंडल' सामाजिक धरातल के एक बड़े साहित्यकार रहे हैं। उन्होने 'बोस' उपन्यासें कई कहानी संग्रह, जीवनचरित और कई अन्य कृतियाँ–'रहिमन सुधा' (1928, संकलित रचनाएँ) गद्य–मानस, पंचाकृत्त, कथालंकार प्रवेशिका, नीतिशास्त्र, शेष पाण्डुलिपि (बंगला से हिन्दी अनुवाद), 'गरीबी के दिन' (अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित उपन्यास) की रचना की। वे बंगला, उर्दू, अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। उनकी रचनाओं में प्रेमचंद की तरह हीं आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के दर्शन होते हैं। इसलिए किसी में तो उन्हें 'बिहार का प्रेमचंद' भी कहा है। उनकी रचनाओं में स्वदेशी भावना, नारी मनोविज्ञान, राष्ट्रीयता, सामाजिक जागरण आदि देखा जा सकता है।

अनूपलाल मंडल ने 1929 में पहला उपन्यास लिखा 'निर्वासिता'। तब से लेखन की एक लंबी परंपरा चल पड़ी। 'समाज की बेदी पर (1930)। 'सामी (1931), 'ज्योतिर्मयी' (1933), रूपरेखा' (1934), 'सविता' (1935), 'मीमांसा (1937), 'बेअभागे' (1937), 'दस बीघा जमीन' (1941), 'ज्वाला', 'आवारों की दुनिया' (1945), 'दर्द की तस्वीरें,' 'रक्त और रंग' (1955), 'अभिमान के पथ', 'केन्द्र और परिधि'(1957), 'अन्नपूर्णा', 'उत्तरपुरुष' (1970), 'नया सूरज–नया चाँद (1987) की रचना की।

अनूपलाल मंडल ने लगभग 35–36 पुस्तकों की रचना की उसमें उनकी आत्मकथा भी महत्वपूर्ण है। 'और कितनी दूर है मंजिल', के नाम से प्रकाशित आत्मकथा में सतत जीवन का संघर्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। उनकी आत्मकथा प्रेरणा से भरपूर है। इस आत्मकथा की भूमिका 'कुछ अपनी ओर से' (18 मई सन् 1977) में लिखा है :– ''इस आत्मकथा से आज की युवापीढ़ी को अपना जीवन गढ़ने की बड़ी प्रेरणा मिलेगी, साथ हीं उसे यह भी अनुभव होगा कि मात्र अपर प्राइमरी पासकर तीन रूपये मासिक पर लोअर प्राइमरी के गुरू से अपने जीवन का प्रारंभ किया गया और उस दिशा में आगे बढ़ते–बढते बीकानेर के एक इंटर कॉलेज का व्याख्याता बना।''

भौतिक संपदा के अभाव में भी अनूपलाल मंडल जी ने साहित्य की सेवा करना नहीं छोड़ा। अनूपलाल मंडल जी का आत्मकथा लिखने वालों के लिए भी प्रेरणा का काम करेगी। इनकी काव्य कथा में सब कुछ सरल खुला–खुला सा दिखता है। इसलिए किसी साहित्यकार के जीवन

की एक सत्य छवि आत्मकथा में दिखाई पड़ती है। अनूपजी अपनी पीड़ा को अक्षरशह व्यक्त किया है। उनकी पहली शादी एक आठ साल की कन्या से होती है जो विवाह के चौथे महीने में ही काल–कवलित हो जाती है। पुनः दूसरी शादी होती है और 1922 के 22 दिसम्बर को एक पुत्र रत्न को जन्म देकर उसे बिन देखे ही परलोक सिधार गयी। ऐसी मर्मांतक पीड़ा का पता अनूपलाल जी को एक पत्र से प्राप्त हुआ। ऐसी कई घटनाएँ हैं उनके जीवन की जो मन को छू लेती है।

एक कुशल उपन्यासकार की लेखनी से 'आत्मकथा' का लेखन अपने आप में महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रायः पचास से ऊपर उपशीर्षकों में विभक्त उक्त आत्मकथा में छोटी से छोटी बातें भी ऊब पैदा नहीं करती है। अनूपलाल जी की आत्मकथा की शैली आकर्षक है। शब्द भी मन को छू लेने वाले हैं और बातों में सरजता है। प्रभावशीलता के साथ–साथ सहजता भी है।

अनूपलाल मंडल जी को अधिक यश 'बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद' की सेवा में आने के बाद प्राप्त हुआ। 'परिषद' के प्रकाशकों में स्तरीयता लालित्य या बहिरंग साज–श्रृंगार में बहुत हद तक अनूपलाल जी के आत्मानुभव का लाभ सुलभ रहा है। ओम प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश' जी ने लिखा है–"महाविद्यालय में अध्यापन से लेकर 'परिषद' में प्रकाशनाधिकारी तक की यात्रा में इनकी सुयोग्यता अद्भुत रूप से असंदिग्ध सिद्ध होती रही। यह प्रशंसार्ह्य भी है और सुखद ईर्ष्या भी। 37–38 वर्ष की बात है मगर आज भी मुझे याद है– 'परिषद' के निजी भवन की गृह प्रवेश–पूजा पर आदरणीय मंडल जी बैठे हुए थे और पुरोहित बन पूजा करवा रहे थे। श्रद्धेय आचार्य शिवपूजन सहाय जी,' आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री जी', डॉ0 परमानन्द पाण्डेय जी बैठे हुए थे और सौभाग्य से वहीं मैं भी था हाथ जोड़े। यह बात आत्मकथा में भी प्राप्त है। 'बिहार के प्रेमचंद' कहलाने वाले अगर प्रेमचंद से पूर्व होते तो कदाचित 'प्रेमचंद' को उत्तर का 'अनूपलाल मंडल' कहा जाता। रचयिता अनूपलाल मंडल को साहित्य में यश मिला मगर उतना नहीं जितने के ये अधिकारी थे। हालांकि इनकी आत्मकथा के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि ये संतोष परम सुखम् के विश्वासी थे तो जो मिला उसी को प्राप्य मान बैठे।"

अध्ययन की आवश्यकता :–

एक साहित्यकार का जीवन सरल और सपाट नहीं होता। विभिन्न प्रक्रियाओं, टेढ़े–मेढ़े, दुर्गम–सुगम रास्तों से गुजरते हुए उपयोगी जीवनानुभव प्राप्त होते हैं जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, वैचारिक, स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय, मानवीय मूल्य बोध, जीवन–दर्शन तथा भाषा वैभव आदि शामिल रहते हैं। इस प्रस्तावित शोध के माध्यम से उपर्युक्त सभी पक्षों का वैज्ञानिक पद्धति से आलोचनात्मक अध्ययन तथा मूल्यांकन करके समाज उपयोगी नवीन सत्यों का निर्धारण किया जा सकेगा।

समाज में अनेक कुरीतियाँ जैसे–बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, दहेज प्रथा, जातिगत वैमनस्य, सांप्रदायिकता आदि व्यापक स्तर पर मौजूद थी। ऐसी स्थिति में लेखक पर भी उक्तपरिस्थिति का प्रभाव पड़ा।

साहित्य में ऐतिहासिक घटना क्रमों के प्रयोग का मूल्यांकन भी इस प्रस्तावित शोध में सम्मिलत है। यह आत्मकथाओं के मूल्यांकन का एक नया मार्ग प्रशस्त करेगा।

आत्मकथा केवल आत्मकथा की विधा ही नहीं अपितु आत्मनिरीक्षण, आत्मविश्लेषण की भी श्रेष्ठ प्रक्रिया है। अतएव इसका विनियोजन आत्म प्रेषण के लिए ही नहीं, आत्म विकास के लिए भी होता है। लेकिन आश्चर्य का विषय है कि यह विधा समीक्षकों तथा अन्वेषकों की दृष्टि में प्रायः उपेक्षित रही है। अतः यह भी इस विश्व के चुनाव का एक कारण समझा जा सकता है।

पूर्वकृत्त शोध कार्य

मेरे दृष्टि कोण से सर्वप्रथम आत्मकथा पर हुए कुछ प्रमुख शोधकार्यों पर दृष्टिपात कर लेना इस शीर्षक को सुस्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होगा। जो निम्नवत्त है :–

आत्मपरक साहित्य से जुड़े अनेक विषयों पर पूर्व में शोध कार्य किए गए हैं। कुछ प्रमुख शोध कार्यों की सूची निम्नवत है :–

1. हिन्दी साहित्य में आत्मकथा (दिल्ली विश्वविद्यालय1967) शोधकर्त्ता–सरोज जग्गी।
2. आत्त्मकथा की संस्कृति और अपनी खबर (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय 1994), शोधकर्त्ता–पंकज चतुर्वेदी।
3. आत्मकथाकार बच्चन : काव्यात्त्मक मूल्यांकन (महर्षि दयानन्द विश्वविद्याालय 1988), शोधकर्त्ता–स्नेहलता शर्मा।
4. दलित आत्मकथा की परंपरा और अपने–अपने पिंजरे (दिल्ली विश्वविद्याालय 1996), शोधकर्त्ता–अभय कुमार।

5. हिन्दी आत्मकथा स्वरूप और साहित्य (गुजरात विश्वविद्यालय 1989), शोधकर्त्ता–कमलेश।
6. आत्मकथा–साहित्य का युगबोध–(कानपुर विश्वविद्याालय1991), शोधकर्त्ता–आर0 के खुराना।
7. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में क्रांतिकारियों को आत्मकथाओं की अध्ययन–(पंजाब, 1996) शोधकर्त्ता–सुमन सचोव।
8. हिन्दी के आत्मकथा साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन–(दक्षिण भारत,1990), शोधकर्त्ता सुरेन्द्र मेहता हेलेकर।
9. हिन्दी का आत्मकथा साहित्य–(गोरखपुर, 1999) शोकर्त्ता– रामाज्ञा सिंह।
10. हिन्दी की साहित्यिक आत्मकथाओं का मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक अनुशीलन –(कानपुर, 1998) शोधकर्त्ता–कुसुम श्रीवास्तव।
11. हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में रचना प्रक्रिया का विश्लेषण (पंजाब, 2001), शोध्कर्त्ता–सुधा राठी।

उपर्युक्त शोध–शीर्षकों को देखकर हम यह कह सकते हैं कि यद्यपि आत्मकथा साहित्य पर अद्यावधि अनेक शोधकार्य किये जा चुके हैं लेकिन इन पूर्वकृत्त शोधकार्यों की एक निश्चित दिशा निर्दिष्ट की जा सकती है। यथा :–

- आत्मकथा साहित्य पर हुए अबतक के शोधकार्य आत्मकथा के विधागत विश्लेषण, उसके उद्भव विकास तथा संरचनात्मक विशेषता पर संकेंद्रित रहे हैं।
- अद्यावधि हुए शेधकार्यो में हिन्दी साहित्य के रचनाकारों की आत्मकथाओं को हीं शोध का विषय बनाया गया है। जबकी आत्मकथा लेखन का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इस पर अनेक नवीन शोधकार्य किए जा सकते हैं।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अनुसंधित्त्सु द्वारा शोध के लिए प्रस्तावित प्रस्तुत विषय नितांत मौलिक है। जिसकी उपयोगिता साहित्यिक और सामाजिक दृष्टिकोण से असंदिग्ध है।

शोध का उद्देश्य

तत्कालीन सामाजिक संरचना की दशा और दिशा को दर्शाना इस शोध–प्रबंध का उद्देश्य होगा। साथ ही आत्मकथा के माध्यम से एक परिवार और समाज की परिस्थितयों को उजागर किया जायेगा।

शोध की सीमा

हिन्दी साहित्य में 'आत्मकथा' लेखन की प्रक्रिया बहुत पहले से चली आ रही है। शोध के विषयानरूप तथ्यों को सामने रखा जायेगा। जिससे आत्मकथाकार 'अनूपलाल मंडल' के योगदान प्रस्तुत किया जायेगा। इस क्रम में उनके द्वारा रचित अन्य ग्रंथों का भी अध्ययन और प्रस्तुतीकरण अनिवार्य होगा ताकि उनकी आत्मकथा को उनकी रचनाधर्मिता के अनुरूप बल मिल सके। कुल मिलाकर 'अनूपलाल मंडल' की रचनाधर्मिता को हीं केन्द्र में रखा जायेगा। इस संदर्भ में सहायक ग्रंथों से भी सहायता ली जायेगी।

परिकल्पना

1. यह शोधकार्य सामाजिक, साहित्यिक दोनों स्तरों पर आत्मकथा को अनावृत करेगा।
2. साहित्यिक सभाओं के निमार्ण, गोष्ठियों के आयोजन तथा हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में प्रस्तावित आत्मकथा नई दिशा प्रदान करेगी।
3. प्रस्तावित शोध प्रबंध के माध्यम से यह सपष्ट हो जायेगा कि मध्यवर्गीय लेखक के जीवन में सैकड़ों तरह की कठिनाईयाँ आती हैं, लेकिन वह हिम्मत से इसका सामना करता है। यह आत्मकथा प्रेरक है और मानवीय मूल्य को दर्शाता है।

प्रस्तावित अध्याय योजना

उमक्रम (प्रस्तावना)

1. हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लेखन की पृष्ठभूति एवं परंपरा।
2. 'अनूपलाल मंडल' का ब्यक्तित्व एवं कर्तृत्व।
3. 'अनूपलाल मंडल' की आत्मकथा–लेखन की विशेषताएँ।
4. 'अनूपलाल मंडल' की आत्मकथा में परिवार, समाज और राष्ट्र।
5. 'अनूपलाल मंडल' की आत्मकथा में जीवन की त्रासधी।
6. उपसंहार।

शोध की प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य में विवेच्य आत्मकथा के विश्लेषण के लिए वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ पद्धति के साथ–साथ समीक्षात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया जायेगा। इसके साथ ही आत्मकथा के विश्लेषण हेतु समाजशास्त्रीय दृष्टि को आधार बनाया जायेगा। जिसे

आत्मकथा को मात्र वैयक्तिक सरोकारों से भी समझा जा सके। शोधार्थी का कर्त्तव्य होगा कि ईमानदारी पूर्वक सामग्री संचयन कर अपनी शोध प्रक्रिया से जुड़े रहें। शोधार्थी का यह भी उद्देश्य होगा कि वह परीक्षण, मूल्यांक और शोध निष्कर्षों की स्थापना के लिए शोध प्रविधि के दोनों कारकों का उपयोग कर शोध की मौलिकता भी बरकरार रखें।

आधार ग्रंथ सूची

1. मंजिल और कितनी दूर (आत्मकथा) – साहित्य संसद आर0 जेड–35वीं गली नं0–1ए, कैलाशपुरी, एक्सट्रेंशन, नई दिल्ली–110045, प्रकाशन वर्ष–2021
2. निर्वासिता–चाँद प्रेस, इलाहाबाद, 1929
3. समाज की वेदी पर–युगांतर साहित्य मंदिर भागलपुर सिटी भागलपुर, 1930
4. साकी–श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, प्रकाशन–1931
5. ज्योतिर्मयी– कला निकेतन, पटना–4 1933
6. रूपरेखा–श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, 1934
7. सविता– श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4,1935
8. मीमासा– हिन्दी प्रचार पुसतकालय, पिचास मोचन, वाराणसी, 1937
9. वे अभागें–श्री अंजना प्रेस लिमिटेड, नया टोला पटना–4, 1937
10. दस बीघा–युगांतर साहित्य मंदिर, भागलपुर–1941
11. ज्वाला–तिलक भंडार, भागलपुर, 1941
12. आवारों की दुनिया– युगांतर साहित्य मंदिर, भागलपुर सिटी, 1945
13. दर्द की तस्वीरें–युगांतर साहित्य मंदिर, भागलपुर सिटी, 1945
14. बुझने न पाए–युगांतर साहित्य मंदिर, भागलपुर सिटी 1946
15. अन्नपूर्णा–कला निकेतन, पटना–4, 1957
16. रक्त और रंग–ज्ञानपीठ लिमिटेड, पटना–4, 1955
17. अभियान का पथ–ग्रंथ माला कार्यालय पटना–1955
18. केन्द्र और परिधि– पराग प्रकाशन पटना–4, 1957
19. तूफान और तिनके–साहित्य कला मंदिर, कुरसेला, 1960
20. उत्तर पुरूष–राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियांगज दिल्ली, 1970
21. नया सूरज नया चाँद–शेखर प्रकाशन, बोरिंग रोड पटना–1987

शोध कार्य के सहायक गंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास—डॉ0 नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास—डॉ0 बच्चन सिंह
4. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास—डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिन्दी साहित्य कोश भाग—1 तथा भाग—2— डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा
6. हिन्दी उपन्यास—डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव
7. हिन्दी कहानी का इतिहास—गोपाल राय
8. परिधि पर स्त्री—मृणाल पांडेय
9. नारीत्व—शान्ति कुमार स्थाल
10. जीना है तो लड़ना होगा—वृंदा करात।
11. भारतीय महिलाएँ दशा और दिशा— सुभाष शर्मा

शोध-निर्देशिका

डॉ. अर्चना कुमारी

सहायक प्राचार्य, हिंदी विभाग

राम निरीक्षण आत्मा राम

महाविद्यालय, समस्तीपुर

शोध प्रज्ञा

बुलबुल कुमारी

पता - ग्राम + पोस्ट- हरपुर बोचहा

थाना -विद्यापति नगर

जिला – समस्तीपुर

पिनकोड-848503

पैट क्रमांक -22090106